राजस्थान में पर्यटन का विकास एवं सम्भावना

*डॉ. योगेश कुमार सबल

शोध सारंश

राजस्थान का देश के पर्यटन नक्शे पर विशिष्ट स्थान है। महाराष्ट्र, दिल्ली और तामिलनाडु के पश्चात राजस्थान की देश के पर्यटन व्यवसाय में सर्वोच्च स्थिति है।। उल्लेखनीय है कि उपयुक्त तीनों राज्यों में अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे भी है। विदेशी पर्यटक भरत में बिताए कुल दिनों में से अधिकतम दिनों में से अधिकतम दिन राजस्थान में व्यतीत करते है। रजस्थान की परम्परा और संस्कृति के प्रति विदेशी पर्यटकों में विशेष आकर्षण है। जयपुर, उदयपुर, जैसलमेंर और विभिन्न अन्य स्थानों पर विदेशी और धरेलु पर्यटक बढे है।

Key words: पांरपरिक पर्यटन, शैक्षिक पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, उद्योग

परिचय–

किसी निश्चित भू–भाग में किये जाने वाला भ्रमण पर्यटन कहलाता है। पर्यटन भारत में एक बड़ा सेवा उद्योग है, साथ ही बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्र अर्जित करने वाला बडा रोजगार क्षेंत्र है, यह इतना बडा क्षेत्र है कि अगर दुनिया के पैमाने पर देखा जाए तो रोजगार प्राप्त करने वाला हर दसवा व्यक्ति पर्यटन के क्षेत्र मे काम कर रहा है। पर्यटन उद्योग का जीडीपी में भी बडा योगदान है, यह सेवा क्षेत्र को गति प्रदान करता है। पर्यटन उद्योग के विकास के साथ हवाई सेवा, होटल, भूतल परिवहन आदि व्यवसाय में भी वृद्वि होती है। भारत में आने वाले विदेशी यात्रियों से विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होती है। पर्यटन से दो देशो मे सास्कृतिक आदान प्रदानता बढती है।

सांस्कृति साहित्य में पर्यटन के लिए दो शब्दों का प्रयोग किया गया है। जिसका उद्गम पर्यटन से हुआ है पर्यटन का अर्थ है की बहार जाना यें दो शब्द है–

- पर्यटन– इसका अर्थ है कि मनोरंजन या ज्ञान प्राप्ति के लिए यात्रा करना।
- देशाटन– विदेशो में मुख्यतः आर्थिक लाभ के लिए यात्रा करना।

इस प्रकार पर्यटन शब्द को निम्न प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है।

युनीवर्सल शब्दकोष के अनुसार – पर्यटक शब्द 1876 से पहले भी प्रयोग किया जाता था। इसके अनुसार पर्यटक वह व्यक्ति है जो कि सूचना प्राप्त करने तथा मनोरंजन करने के लिए यात्रा करता है। ताकि अन्य व्यक्तियों को वह अपनी यात्रा का विवरण दे सके।

अर्थशास्त्री एवं पर्यटक लेखक श्री नोरमल के अनुसार – ''प्रत्येक व्यक्ति जो विदेशो में स्थाई रूप से निवार्सित होने या रोजगार की दृष्टि के अतिरिक्त अन्य कारणों से प्रवेश करता है तथा जो अपने अस्थायी ठहरने के दौरान इस देश में अर्जित धन को व्यय करना चाहता है''

पर्यटन की सकंल्पना के अनुसार पर्यटन को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है।

1 **धरेलु, या आन्तरिक पर्यटन –** इस पर्यटन के अन्तर्गत पर्यटक अपने देश की सीमाओं ं मे भ्रमण करते है। इसी लिये इन्हें मुद्र परिवर्तन, भाषा परिवर्तन, पासपोर्ट, बीसा, स्वास्थ्य प्रमाण–पत्र आदि की आवश्यता नही पड़ती।

2 **अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन –** अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन से आश्य जो यात्राये अपने देश की सीमाओं से बाहर की जाती है, जिसके अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक दूसरे देशों मे जाता है तो उसे देश की मुद्र का प्रबन्ध, पासपोर्ट, बीसा, भाष ज्ञान, स्पास्थ्य प्रमाण–पत्र आदि समस्त औपचारिकतायें पूर्ण करनी पड़ती है।

राजस्थान में पर्यटन उद्योग–

राजस्थान का देश के पर्यटन नक्शे पर विशिष्ट स्थान है। महाराष्ट्र, दिल्ली और तामिलनाडु के पश्चात राजस्थान की देश के पर्यटन व्यवसाय में सर्वोच्च स्थिति है।। उल्लेखनीय है कि उपयुक्त तीनों राज्यों में अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे भी है। विदेशी पर्यटक भरत में बिताए कुल दिनों में से अधिकतम दिनों में से अधिकतम दिन राजस्थान में व्यतीत करते है। रजस्थान की परम्परा और संस्कृति के प्रति विदेशी पर्यटकों में विशेष आकर्षण है। जयपुर, उदयपुर, जैसलमेंर और विभिन्न अन्य स्थानों पर विदेशी और धरेलु पर्यटक बढे है। पैलेस ऑन व्हील्स का अधिकाधिक लोकप्रिय होना इसका प्रमाण है। किन्तु इन प्रयासों में और तेजी लाने की आवश्यकता है।

अध्ययन क्षेत्र–

राजस्थान राज्य भारत के उत्तर–पश्चिमी भाग में स्थित है। इसकी भौगोलिक भौगोलिक स्थिति 2303 से $30^0$12′ उत्तरी अक्षांशों एवं $69^0$30 से $78^0$17′ पूर्वी देशान्तरों के मध्य है, राजस्थान भारत का प्रथम वृहद्तम राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है, जो सम्पूर्ण राष्ट्र के क्षेत्रफल का 10.41 प्रतिशत है इस राज्य का आकार एक विषमकोण समचतुर्भुज अथवा रोबस के समान पतंगाकार है, जिसकी पूर्व से पश्चिम लम्बाई 850 किलोमीटर तथा उत्तर से दक्षिण चौड़ाई 784 किलोमिटर है। इस राज्य की सम्पूर्ण स्थलीय सीमा की लम्बाई 5,290 किलोमीटर है। जिसमें से पाकिस्तान क साथ लगने वाली अन्तर्राष्ट्रीय सीमा लगभग 1,070 किलोमीटर है राजस्थान के श्रीगंगानगर, बीकानेर, जैसलमेंर तथा बाडमेर जिलों को पाकिस्तान के बहावलपुर, खैरपुर एवं मीरपुर खास जिलों से पृथक करती है। इस राज्य के उत्तर में एवं उत्तर पूर्व में पंजाब, हरियाणा, पूर्व में उत्तर प्रदेश, दक्षिण पूर्व में मध्यप्रदेश त्था दक्षिण–पश्चिम में गुजरात राज्य स्थित है। आन्तरिक दृष्टि से राज्स्थान के उत्तर में गंगाानगर जिला, दक्षिण में सिरोही, उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा व झालावाड़ जिले है और पूर्व में भरतपुर, धोलपुर, सवाई माधोपुर व कोटा जिले है मध्य में हृदय के समान अजमेंर जिला है। क्षेत्रफल के दृष्टिकोण से भारत के राज्यों में राजस्थान का स्थान प्रथम है।

विधि तंत्र–

राजस्थान में पर्यटन का विकास एवं सम्भावना का अध्ययन करने के लिए प्रथम व द्वितीयक दोना प्रकार के आकड़ों का संकलन किया गया है। प्राथमिक आकँडों का सकलन करने हेतु व्यक्तिगत प्रेक्षण, साक्षात्कार, प्रश्नावली एवं अनुसूची का सहार लिया गया।

द्वितीय आकँडों का संग्रह करने के लिए प्रकाशित एंव अप्रकाशित स्त्रोतो का सहार लिया है। प्रकाशित स्त्रोतों में पुस्तक, पत्रिका, समाचार पत्र, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन, निजी प्रकाशन, सरकारी प्रकाशन, अर्द्व सरकारी प्रकाशन आदि को सम्मलित किया है। अप्रकाशित स्त्रोतो में सरकारी अभिलेखों, अर्द्व सरकारी अभिलेख, निजी अभिलेखों की भी सहायता ली गयी है।

राजस्थान के पर्यटक स्थल–

राजस्थान गौरवपूर्ण इतिहास व परम्पराओं की यह वीर भूमि है, जहाँ की राजपूतानी आन और शौर्य की कीर्ति विश्व में अदभुत है। पहाड पहाडियों पर निर्मित दुर्गम दुर्गो, प्रसादों, सुरम्य झीलों, गहनो वनो, पठारों व विस्तृत भूमि आदि प्रकृति के विभिन्न रूपों से श्रृंगारित यह राजधरानों की भूमि यदि पर्यटको अपनी और आकर्षित करती है।

पर्यटकों की संख्या रमणीय स्थलों की दृष्टि से राजस्थान को तीन भागों में बाटा जा सकता है।

उत्तरी पूर्वी क्षेत्र –

जयपुर उत्तरी पर्यटक क्षेत्र प्रमुख केन्द्र है जिनमें अलवर, भरतपुर एवं सवाई माधोपुर भी सम्मिलित है। स्वतंत्रता के पूर्वी जयपुर, अलवर, भरतपुर, मे तीन राजाओं के राज्य सम्मिलित थें। गंगा के मैदान व आगरा, दिल्ली नगरों के निकट स्थिति होने कारण यह क्षेत्र बड़ी मात्रा में पर्यटको को आकर्षित करता है भौगोलिक तथा ऐतिहासिक दृष्टि से यह क्षेत्र उपजाऊ है गंगा का मैदान तथा मुगलो व राजपूतो की वीरता का क्षेत्र रहा हैं। पश्चिम का थार मरूस्थल एवं मध्य दक्षिणी अरावली पर्वत श्रेणी पर्यटकों का यह प्रवेश द्वारा है। दिल्ली में देश के कुल पर्यटकों का प्रतिशत 33.5 है इसका असर राजस्थान पर भी पड़ता है।

पश्चिमी क्षेत्र–

इस क्षेत्र का प्रमुख पर्यटक स्थल जोधपुर है। यह दूर पश्चिम का द्वार कहा जा सकता है। यहां पर बने पत्थर के मकान जोंधपुर, जैसलमेंर एवं बीकानेर में सर्वत्र देखे जा सकते है। किराडू, मेंडता, नाकोड़ा, जालौर तथा ओसियाँ इत्यादि भी दर्शनीय स्थान है।

दक्षिण पूर्वी क्षेत्र –

अरावली के पार पर्यटकों की दृष्टि से यह धनी क्षेत्र है। यहाँ पर अनेक दर्शनीय पर्यटक स्थल है। यह पर्यटक स्थ भवन निर्माण एंतिहासिक तथा धार्मिक महत्व के हैं। इस क्षेत्र में स्थित चितौडगढ, कुम्भलगढ, और माण्डलगढ के किले भारत के प्रसिद्व किलों में से है। रणकपुर, माउण्ट आबू नागदा एवं चितौड़गढ के जैन मन्दिर भी बड़े प्रसिद्व है। नाथद्वारा, एकलिंगजी, चारभुजा व कोटा के मन्दिर भी कम महत्वपूर्ण नही कहें जा सकते है।

पर्यटन का उद्देश्य–

1 मानव के ज्ञान में अभिवृद्वि करना।

2 मानव को नीरसता, ऊब तथा एकांकी जीवन से सुगम्य प्राकृतिक छटा के बीच ले जाना क्योंकि प्रकृति सबसे बड़ी चिकित्सक है।

3 राजस्थान में पर्यटन की अधिक की संभावना को बल प्रदान करना

4 राजस्थान में पर्यटन के विकास में आने वाली बाधाओं को पहचान कर दूर करने के सुझाव प्रदान करना।

5 पर्यटन संसाधन विकास योंजना में सहायता प्रदान करना

***सह–आचार्य**
भूगोल विभाग
बी.एन.डी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
चिमनपुरा (जयपुर)

संदर्भ सूची

1 राजस्थान एक अध्ययन 2011 साहित्य भवन प्रकाशन

2 शर्मा एस. के एव सिंह, आर. पी 2003 पर्यटन भूगोल, नेहा पब्लिकेशन, बरेली

3 भल्ला एल. आर. 2004 राजस्थान का भूगोल कुलदीप प्रकाशन जयपुर

4 राजस्थान एक दृष्टि में 2007 उपकार प्रकाशन

5 बंसल सुरेश चन्द्र 2003 भारत का भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन मेंरठ